समझौता ।लघुकथा।

बेटे के ब्याह से ज्यादा खुशी धुयेन्द्र बाबू को मिलने वाले दहेज से हो रहा थी । लम्बी बाट जोहने के बाद तो तैयार हुई थी दहेज की फसल ।बड़े अरमान के साथ धुयेन्द्र बाबू ने बेटा तपेन्द्र का ब्याह तय किया था।ब्याह की खबर लगते ही तपेन्द्र ने मना कर दिया ।बडी समझाइस के बाद तैयार तो हुआ पर इस शर्त पर कि वह लड़की खुद देखेगा । छाती पर पत्थर रखकर दोनों पक्ष राजी हुए ।तपेन्द्र लडकी देखने गया । लड़की देखते ही मना कर दिया कई इल्जाम लगाकर ।

तपेन्द्र की इंकार से धुयेन्द्र बाबू की फसल पर ओले पड़ने लगे ।धुयेन्द्र बाबू किसी भी कीमत पर मालदार पार्टी को जाने नही देना चाह रहे थे । वे दहेज की अच्छी फसल को काटने के लिये तपेन्द्र से छोटे बेटे सतेन्द्र के ब्याह का प्रस्ताव लेकर पहुंच गये ।बधु पक्ष ने भी सहर्ष इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

बाप की छूछी आन,मान ,शान और दो परिवारों की कानूनी तकरार, बर्बादी और दहेज के बढते वजन को देखकर सतेन्द्र ने अपनी उम्र से बड़ी लडकी से ब्याह के समझौते पर स्वीकृति दे दी । नन्दलाल भारती